International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939

रवीन्द्र का लया की कहानी 'नौ साल छोटी पत्नी' की प्रासं गकता

मोनिका राय शोध-छात्रा
वश्व-भारती शांतिनिकेतन
पश्चिम बंगाल- 731235

वर्तमान समय में प्रेम सबसे जटिल वषय माना जाता है| वशेषकर पति-पत्नी और प्रेमी-प्रे मका के बीच का प्रेम | रवीन्द्र का लया की कहानियों का प्रमुख वषय प्रेम ही है और जिस निपुणता के साथ उन्होंने प्रेम के सुलझे स्वरुप को प्रस्तुत कया है, उल्लेखनीय है | आज हम जितना अ धक भौतिक तरक्की कर रहे हैं उतना ही ज्यादा इस संवेदनात्मक वषय में उलझते जा रहे हैं | प्रेम से समस्त भेदभाव को दूर कये जा सकते हैं और आपसी रिश्तों को और भी मजबूत कया जा सकता है| ले कन यह दुःख की बात है क वर्तमान में लोग भौतिक सु वधाओं के पीछे भाग रहे हैं और मानवीय संवेदना से दूर होते जा रहे हैं | आपसी रिश्तों को बनाए रखने के लए जिस प्रेम की जरुरत है कहीं न कहीं उसकी कमी हमें जरुर दिखाई देती है |अक्सर आज का युवा वर्ग अपरिपक्व प्रेम का परिचय देता है | छोटी-छोटी बातों पर वे नाराज हो जाते हैं और एक दूसरे से कभी भी समाप्त न होने वाली दूरी बना लेते हैं | ववाह पूर्व प्रेम वर्तमान समय में एक समान्य बात है ले कन ववाहोपरांत इस बात का खुलासा होने पर अक्सर पति-पत्नी के रिश्तों में दरार आ जाता है | आज का युवा वर्ग ववाह से पूर्व प्रेम करता है और करना भी चाहता है ले कन ववाहोपरांत उसे यही बात अपनी पत्नी या अपने पति के सन्दर्भ में स्वीकार्य नहीं है | निश्चित तौर पर यह आज की नयी पीढ़ी की संकीर्ण सोच का परिचायक है | ठीक ऐसे समय और ऐसी परिस्थितियों में ही रवीन्द्र का लया हमारे सामने एक नयी उम्मीद और सोच के साथ प्रस्तुत होते हैं | उनकी प्र सद्ध कहानी 'नौ साल छोटी पत्नी' हमारे समक्ष एक उदार दृष्टि और सोच प्रस्तुत करती है | निश्चित तौर पर यह कहा जा सकता है क यह कहानी युवा पीढ़ी के लए बहुत अ धक प्रासं गक है |

'नौ साल छोटी पत्नी' कहानी के माध्यम से रवीन्द्र का लया ने जिस आदर्श दाम्पत्य जीवन का वर्णन कया है वह उल्लेखनीय है | सुखी दाम्पत्य जीवन के लए प्रेम में जिस परिपक्वता की जरुरत होती है, उसी का वर्णन इस कहानी में बहुत कुशलतापूर्वक कया गया है | प्रेम में धैर्य का बहुत महत्त्व होता है और आज की युवा पीढ़ी में इसी चीज की सबसे ज्यादा कमी है | यह कहानी हमें यह बतलाती है क धैर्य के साथ न केवल प्रेम हा सल कया जा सकता है अ पतु पति-पत्नी के संबंधों को मजबूत और वश्वसनीय भी बनाया जा सकता है | 'नौ साल छोटी पत्नी' कुशल और तृप्ता के वैवाहिक जीवन की कहानी है | ववाह से पूर्व तृप्ता सोम नमक लड़के से प्रेम करती थी और उसे कई प्रेमपत्र भी उन्होंने लखे थे | जिसे तृप्ता अब तक संभाल कर रखीं थीं और अक्सर चुपके से उसे निकाल कर पढ़ती थी | तृप्ता का पति कुशल उससे नौ साल बड़ा था अर्थात तृप्ता कुशल की 'नौ साल छोटी पत्नी' थी | जैसा की आजकल कई लोगों को इस बात का बहुत अहंकार होता है क उसकी पत्नी बहुत कम उम्र की है ले कन कुशल के साथ यह बात नहीं थी | " मैट्रिकुलेशन का सर्टि फकेट देख कर कुशल श थल हो गया था | उसे लग रहा था जैसे अनजाने में उससे चूजा जिबह हो गया हो | सर्टि फकेट के हिसाब से तृप्ता की उमर कुशल से नौ साल कम बैठती थी |" 1

कुशल न केवल उम्र में अपनी पत्नी से नौ साल बड़ा था बल्कि समझदारी के मामले में भी उससे बड़ा था और शायद यह आवश्यक भी था क अपने से उम्र में छोटी पत्नी की तुलना में अ धक परिपक्व होने का परिचय दे | यही वजह थी क कुशल को तृप्ता के ववाह से पूर्व प्रेम के बारे में पता चलने पर वह उग्र नहीं होता है और धैर्य के साथ काम लेता है | तृप्ता के ट्रंक की छानबीन करते हुए कुशल ने पाया था क "ट्रंक के सबसे नीचे अख़बार का एक बड़ा काग़ज़ बिछा था, मगर साफ पता चलता था क काग़ज़ के नीचे कुछ है, क्यों क काग़ज़ एक जगह से ऐसे उठा था, जैसे उसके नीचे एक बड़ा मेंढक पड़ा हो | कुशल ने बड़ी एहतियात से वह मेंढक निकला | कागज़ों का एक खस्ता पु लंदा था जिसमें दोनों के ख़त थे | सोम के भी और तृप्ता के भी, जो शायद तृप्ता ने चालाकी से वा पस ले लए थे या सोम ने शराफ़त से लौटा दिए थे | ख़त पढ़ते-पढ़ते कुशल कतनी देर तक हँसता रहा था | तृप्ता ने वही बातें लखीं थीं जो कभी-कभी भावुक होकर उससे भी कया करती है |"2कुशल तृप्ता के खत को पढ़कर यह जान चुका था क यह तृप्ता का कम उम्र में कया गया एक अपरिपक्व प्रेम था और जिसमें प्रेम कम और बचपना अ धक था इसी लए कुशल भी इस बात अ धक वच लत नहीं होता है | शायद उसने यह बात ठान ली थी क वह अपनी पत्नी से इस वषय पर सीधे बात न करकर संकेतों के माध्यम से बताने की को शश करेगा ता क उसकी पत्नी अपनी पुरानी बातों को भुलकर अपने वर्तमान जीवन आनंद के साथ बीता सके | इस लए कुशल अक्सर अपनी पत्नी को कहानी ले खका कहकर संबो धत कया करता था | "कुशल ने उसे आश्वस्त और शांत करने के लए अपने लहजे को भरसक स्वाभा वक बनाते हुए कहा, 'कहानी लख रही हो क्या ? उसने तृप्ता की पीठ थपथपाते हुए कहा 'मुझे लगता है क तुम कहानियाँ लखती रहो तो बहुत बड़ी ले खका हो जाओगी |' तृप्ता कुशल की ओर देखकर मुस्करायी और उसकी बुशशर्ट पर रेंगती हुई एक चींटी फेंकते हुए बोली 'शादी के बाद तो कुछ भी नहीं लखा | वही पुरानी कहानी पढ़ रही हूँ जिसे सुनकर आपने मेरा बहुत मजाक उड़ाया था |"3 यहाँ दोनों के संवाद से स्पष्ट है क कुशल जानबूझकर तृप्ता को ले खका कहकर संबो धत करता है क्यों क उसने उसके पत्रों को पढ़ लया है | जब क तृप्ता ने ववाहोपरांत सोम को पत्र लखना छोड़ दिया था इस लए वह कहती भी है क शादी के बाद उसने कुछ भी नया नहीं लखा | अर्थात ववाह से पूर्व हुई इन छोटी-छोटी बातों को वे दोनों भुला देना चाहते हैं | सुखी दाम्पत्य जीवन का एक राज यह भी है क बीती बातों को हम जितनी जल्दी भुल जाएँगे हमारे लए उतना अच्छा होता है |

वर्तमान समय में आज का युवा वर्ग अक्सर प्रेम में असफल हो जाता है क्यों क वह पुरानी बातों को भुला नहीं पाता है और जिसके कारण वह दुखी भी रहता है | अतीत और भ वष्य मनुष्य के नियंत्रण में नहीं होता है इस लए इन दोनों को लेकर चंतित रहना अच्छी बात नहीं है | प्र सद्ध क व गरिजाकुमार माथुर ने भी अपनी क वता 'छाया मत छूना मन' में इस बात पर बल दिया है क अतीत की बातों को याद करने से केवल कष्ट ही होता है |इस लए अतीत को भुलाकर वर्तमान में जीना ही समझदारी है | 'नौ साल छोटी पत्नी' कहानी इस सन्दर्भ में भी महत्त्वपूर्ण है | यह कहानी इस बात पर जोर देती है क पुरानी बातों से सीख लेकर उसे भुला देने में ही भलाई है |

इस कहानी में तृप्ता को यह एहसास होता है क ववाह से पूर्व उसने सोम को जो प्रेमपत्र लखे थे शायद यह उसकी नादानी थी और उसे सोम के पत्रों का जवाब नहीं देना चाहिए था | तृप्ता ने स्वयं जो नादानी की, वह नहीं

चाहती है क कोई और भी वैसी नादानी करे | तृप्ता के पड़ोस की एक लड़की सुब्बी, जो कसी लड़के से प्रेम करती है और उसे प्रेमपत्र भी लखती है, यह बात तृप्ता को अच्छी नहीं लगती है | वह कुशल से कहती है-"मैंने खुद देखे हैं उसके पास दर्शन के खत | नास-पीटी उनके जवाब भी लखती है |"4 तृप्ता के इस कथन से स्पष्ट है क वह नहीं चाहती है क उसने जो नादानी की कोई और भी करे क्यों क शायद लड़ कयों में अपने प्रेम के बारे में परिवारवालों को बताने का साहस नहीं होता है | इस लए जब तक कोई भी लड़की अपने भीतर साहस का अनुभव न कर सके तब तक उसे प्रेम में पड़ने से बचना चाहिए | जब क कुशल का मानना है क प्रेम करने में और ख़त लखने में कोई बुराई नहीं है | इस लए वह तृप्ता से कहता भी है क उसे इस मामले में उदार होने की जरुरत है | सचमुच वर्तमान समय में प्रेम के प्रति उदारता का भाव होना जरुरी है | वर्तमान समाज में आज भी ऐसे लोग हैं जो प्रेम करनेवालों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं जब क हर कसी को प्रेम करना अच्छा लगता है | समय तेजी से बदल रहा है और आज की युवा पीढ़ी कसी की परवाह कये बिना प्रेम करती है और उसमे अब अपने प्रेम के बारे में बताने का साहस भी पनप रहा है |

कहानी के अंत में तृप्ता में एक बड़ा बदलाव आता है | उसे इस बात का बात का पता चल जाता है क कुशल को उसके और सोम के सम्बन्ध के बारे में सब कुछ पता है | अब उसे लगने लगता है क पुरानी बातों को भुल जाना ही अच्छा है | तृप्ता द्वंद्व की स्थिति में भी अंतः एक निर्णय पर पहुँच जाती है सोम के सभी प्रेमपत्रों को जिसे अब तक उसने बहुत संभाल कर रखा था, नष्ट कर देती है | तृप्ता के इस बदलाव से कुशल का मन हल्का हो जाता है | "वह लौटा तो भरे टब में पानी गरने की वही चर-परि चत आवाज़ सुनायी दी | उसे लगा जैसे सहसा कसी ने देर से उसके कानों में रखी रुई निकाल फेंकी हो या वह बरसों पुराने माहौल में लौट आया हो | उसने देखा तृप्ता औंधी लेटी थी और उसने अपना मुँह त कए में छिपा रखा था | स्टोव पर पानी उबल रहा था था और जले हुए काग़ज़ के पुर्जे खुश्क और भटके पत्तों की तरह कमरे में इधर-उधार उड़ रहे थे | कुछ काग़ज़ स्टोव पर रखे पानी में तिर रहे थे | कुशल ने बड़ी एहतियात से एक स्याह काग़ज़ उठाया और तृप्ता की पीठ पर पापड़ की तरह चूर्ण करते हुए बोला, 'कहानी जला डाली क्या ? उठो... ब्याहता स्त्रियाँ बच्चों की तरह नहीं रोया करतीं |' तृप्ता जो धीमे-धीमे सुबक रही थी, फफक कर रोने लगी और उसकी हिचकी बंध गयी |"5 यहाँ स्पष्ट है क अब कुशल और तृप्ता के मन एक हो चुके थे, दोनों के बीच जो थोड़ी-सी दूरी थी वह समाप्त हो चुकी थी | कुशल को यह एहसास हो रहा था क शायद तृप्ता ववाह से पूर्व जो कया और जो अभी कर रही है दोनों ही अपनी अपनी जगह ठीक थे | कहानी समाप्त होने संजय लीला भंसाली की बहुच र्चत फल्म 'हम दिल दे चुके सनम' (1999) की याद आती है | जहाँ नंदिनी (ऐश्वर्या राय) ववाह से पूर्व समीर (सलमान खान) से प्यार करती है और उसकी मर्जी के वरुद्ध उसकी शादी बलराज (अजय देवगन) से कर दी जाती है | बलराज को जब यह बात पता चलती है क नंदिनी कसी और से प्रेम करती है तो बलराज उग्र नहीं होता है और धैर्य से काम लेता है तथा संजना को उसके प्रेमी से मलाने इटली ले जाता है | फ़ल्म के अंत नंदिनी और समीर की मुलाकात हो जाती है ले कन उसी समय नंदिनी को ये एहसास होता है क प्यार केवल पाने का नाम नहीं है अ पतु निभाने का नाम भी है | नंदिनी भी द्वंद्व की स्थिति में अपने प्रेमी को छोड़कर पति को ही चुनती है |

मोनिका राय शोध- छात्रा वश्व-भारती शांतिनिकेतन

पश्चिम बंगाल- 731235

सन्दर्भ ग्रंथ :

रवीन्द्र का लया- रवीन्द्र का लया की कहानियाँ- वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली,संस्करण-2008 पृष्ठ संख्या- 119

वही, पृष्ठ संख्या-119-120

वही, पृष्ठ संख्या-114

वही, पृष्ठ संख्या-117

वही, पृष्ठ संख्या-122